काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

भारत अध्ययन केन्द्र

एवं

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

का संयुक्त आयोजन

'हिन्दी क्षेत्र और उसकी जनपदीय भाषाएँ'

दस दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

(26 नवम्बर से 06 दिसम्बर, 2018)

अपराह्न 1:30 से सायं 5.00 बजे तक

पंजीकरण

सीटों की संख्या	: 50
स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोधार्थी	: 1000/-
अध्यापक एवं कर्मचारीगण	: 1500/-
पंजीकरण की अन्तिम तिथि	: 20-11-2018

पंजीकरण हेतु भारत अध्ययन केन्द्र के कार्यालय में सम्पर्क करें

उद्घाटन सत्र

मुख्य अतिथि : **प्रो० बलवंत राय शान्तिलाल जानी**
कुलाधिपति, डॉ० हरि सिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

अध्यक्ष : **प्रो० नन्दकिशोर पाण्डेय**
निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (उ.प्र.)

विशिष्ट अतिथि : **डॉ० कपिल तिवारी**
पूर्व निदेशक, आदिवासी लोककला अकादमी, भोपाल (म.प्र.)

आधार वक्तव्य : **प्रो० सदानन्द शाही**
हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

दिनांक : 26 नवम्बर 2018 सोमवार
अपराह्न 1:30 से सायं 5.00 बजे तक
स्थान : **मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र सभागार**
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

सम्पूर्ति सत्र

मुख्य अतिथि : **प्रो. राकेश भटनागर,** कुलपति
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

अध्यक्ष : **प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी**
सेण्टेनरी चेयर प्रोफेसर, भारत अध्ययन केन्द्र एवं **कुलाधिपति**
महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

विशिष्ट अतिथि : **डॉ. विजय शंकर शुक्ल,** क्षेत्रीय निदेशक
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी

दिनांक : 6 दिसम्बर 2018 वृहस्पतिवार
अपराह्न 1:30 से सायं 5.00 बजे तक
स्थान : **कला संकाय, प्रेक्षागृह**
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

आयोजन समिति

संरक्षक : **प्रो. राकेश भटनागर, कुलपति,** काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

कार्यशाला निदेशक : **प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी,** सेण्टेनरी चेयर प्रोफेसर, भारत अध्ययन केन्द्र

कार्यशाला आयोजन समिति

प्रो. युगल किशोर मिश्र, सेण्टेनरी चेयर प्रोफेसर, भा.अ.के. — सदस्य
प्रो. राकेश कुमार उपाध्याय, सेण्टेनरी चेयर प्रोफेसर, भा.अ.के. — सदस्य
श्रीमती मालिनी अवस्थी, सेण्टेनरी चेयर प्रोफेसर, भा.अ.के. — सदस्य
प्रो. उमेश चन्द्र दुबे, संकाय प्रमुख, कला संकाय, का.हि.वि.वि. — सदस्य
प्रो. सदानन्द गुप्त, अध्यक्ष, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ — सदस्य
डॉ. विजय शंकर शुक्ल, क्षेत्रीय निदेशक, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी — सदस्य
प्रो. अवधेश प्रधान, हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि. — सदस्य
प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, हिन्दी विभाग, कला सं., का.हि.वि.वि. — सदस्य
प्रो. सदानन्द शाही, हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि. — सदस्य
प्रो. राजकुमार, हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि. — सदस्य

कार्यशाला आयोजन सचिव
डॉ. अमित कुमार पाण्डेय
सेण्टेनरी विजिटिंग फेलो, भारत अध्ययन केन्द्र

कार्यशाला समन्वयक
प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी
समन्वयक, भारत अध्ययन केन्द्र

डॉ. अमित कुमार पाण्डेय, मो.नं. : **9454737596 श्री विश्वमौलि** मो.नं. : **9450209580**

कार्यशाला आयोजन समिति

प्रो. युगल किशोर मिश्र, सेण्टेनरी चेयर प्रोफेसर, भा.अ.के.	सदस्य
प्रो. राकेश कुमार उपाध्याय, सेण्टेनरी चेयर प्रोफेसर, भा.अ.के.	सदस्य
श्रीमती मालिनी अवस्थी, सेण्टेनरी चेयर प्रोफेसर, भा.अ.के.	सदस्य
प्रो. उमेश चन्द्र दुबे, संकाय प्रमुख, कला संकाय, का.हि.वि.वि.	सदस्य
प्रो. सदानन्द गुप्त, अध्यक्ष, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ	सदस्य
डॉ. विजय शंकर शुक्ल, क्षेत्रीय निदेशक, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी	सदस्य
प्रो. अवधेश प्रधान, हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि.	सदस्य
प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि.	सदस्य
प्रो. सदानन्द शाही, हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि.	सदस्य
प्रो. राजकुमार, हिन्दी विभाग, का.हि.वि.वि.	सदस्य

उद्घाटन सत्र

मुख्य अतिथि : **प्रो० बलवंत राय शान्तिलाल जानी**
कुलाधिपति, डॉ० हरि सिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

विशिष्ट अतिथि : **डॉ० कपिल तिवारी**
पूर्व निदेशक, आदिवासी लोककला अकादमी, भोपाल (म.प्र.)

अध्यक्ष : **प्रो० नन्दकिशोर पाण्डेय**
निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (उ.प्र.)

आधार वक्तव्य : **प्रो० सदानन्द शाही**
हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

दिनांक : 26 नवम्बर, 2018 सोमवार
अपराह्न 1:30 से सायं 5.00 बजे तक
स्थान : **मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र सभागार**
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

सम्पूर्ति सत्र

मुख्य अतिथि : **प्रो. राकेश भटनागर**, कुलपति
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

विशिष्ट अतिथि : **डॉ. विजय शंकर शुक्ल**, क्षेत्रीय निदेशक
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी

अध्यक्ष : **प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी**
सेण्टेनरी चेयर प्रोफेसर, भारत अध्ययन केन्द्र एवं **कुलाधिपति**
महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

दिनांक : 6 दिसम्बर 2018 बृहस्पतिवार
अपराह्न 1:30 से सायं 5.00 बजे तक
स्थान : **कला संकाय प्रेक्षागृह,**
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

सम्पर्क सूत्र

कार्यशाला आयोजन सचिव : **डॉ. अमित कुमार पाण्डेय**
सेण्टेनरी विजिटिंग फेलो, भारत अध्ययन केन्द्र
मो.नं. : **9454737596**, ई-मेल : **amitkumarpandeybhu@gmail.com**

'हिन्दी क्षेत्र और उसकी जनपदीय भाषाएँ'

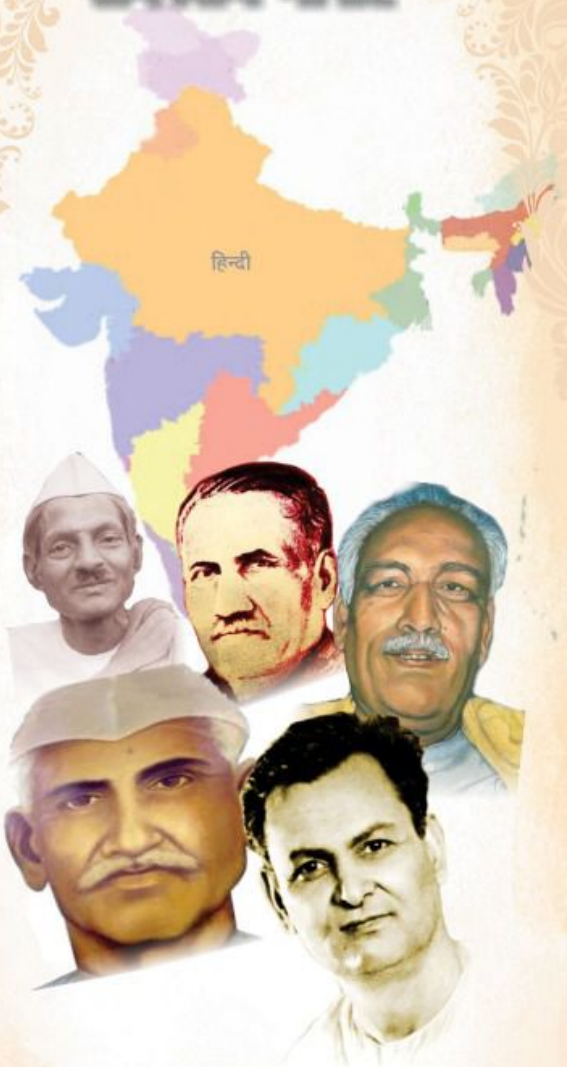

ऑनलाइन पंजीकरण हेतु बैंक का विवरण

COORDINATOR BHARAT ADHYAYAN KENDRA, BHU
SBI, BHU
IFSC Code : **SBIN0000211**
A/c No. : **37976079331**

राष्ट्रीय कार्यशाला

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
भारत अध्ययन केन्द्र
एवं
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

'हिन्दी क्षेत्र और उसकी जनपदीय भाषाएँ'

दस दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला
(26 नवम्बर से 06 दिसम्बर, 2018)

संरक्षक
प्रो. राकेश भटनागर,
कुलपति
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

कार्यशाला निदेशक
प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी
सेण्टेनरी चेयर प्रोफेसर
भारत अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

कार्यशाला आयोजन सचिव
डॉ. अमित कुमार पाण्डेय
सेण्टेनरी विजिटिंग फेलो
भारत अध्ययन केन्द्र

कार्यशाला समन्वयक
प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी
समन्वयक
भारत अध्ययन केन्द्र

भारत अध्ययन केन्द्र की प्रासंगिकता

भारतरत्न महामना पं. मदन मोहन मालवीय के द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना भारतीय ज्ञानपरम्परा के सर्वविध संवर्धन के साथ आधुनिक विद्याओं के मध्य समन्वय के उद्देश्य की पूर्ति के लिये की गयी, परंतु विगत दशाब्दियों से ज्ञान-विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में भारतवर्ष के पारम्परिक अवदान को आधुनिक भारतीय जनमानस के साथ आधुनिक विश्व में सामान्यतः अपेक्षित महत्त्व नहीं मिल पाया है। इसके कारण वर्तमान युवा वर्ग प्राचीन भारतीय ज्ञानसम्पदा की अभूतपूर्व समृद्धि से लगभग अपरिचित होता जा रहा है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में भारतीय ज्ञानपरम्परा में निहित साहित्य, संस्कृति तथा विज्ञान के सार्वकालिक महत्त्व के सूत्रों से युवापीढ़ी को परिचित कराने के स्रोत सन्निहित नहीं हैं। वर्तमान युवा पीढ़ी पाश्चात्य समीक्षकों तथा आविष्कारकों सुकरात, प्लेटो, अरस्तू इत्यादि के अवदान से अधिक परिचित प्रतीत होती है जबकि पाणिनि, बादरायण, पतंजलि, मनु, बौधायन, कणाद, शंकर, आर्यभट्ट, भास्कर, वराहमिहिर, चाणक्य, नागार्जुन, धनवन्तरि, चरक, सुश्रुत, अकलंक तथा अन्य भारतीय मेधा के प्रतिनिधि विद्वानों तथा वैज्ञानिकों के विद्या के विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व अवदान से परचित नहीं हो पाती। पाश्चात्य यूरोपीय ज्ञान-सम्पदा के प्रभाव से आक्रान्त होकर वर्तमान पीढ़ी भारतीय ज्ञान-परम्परा से दूर होती जा रही है। विभिन्न आधुनिक विषयों के शिक्षण हेतु निर्धारित पाठ्यक्रमों में पाश्चात्य उपलब्धियों को अधिक सम्मिलित किया जा रहा है, जबकि उन आधुनिक विषयों के सूत्र भारतीय ज्ञान-परम्परा में युगों से उपलब्ध रहे हैं तथा मानवीय जीवन तथा व्यवहार की सफल सम्पूर्ति में सर्वथा सहायक माने जाते रहें हैं। परिणामस्वरूप आज का समाज हजारों वर्ष पुरानी भारतीय मेधा के नियामक विद्वानों तथा वैज्ञानिकों के अभूतपूर्व अवदान से लगभग अपरिचित होता जा रहा है। साहित्य, कला, संस्कृति, दर्शन, धर्म, राजनीति, विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा, औषधि, प्रबन्धन तथा वाणिज्य इत्यादि के क्षेत्र में उपलब्ध भारतीय पारम्परिक ज्ञान से हम लगभग असम्बद्ध होते जा रहे हैं। औपचारिक रूप से लिपिबद्ध ज्ञान-सम्पदा के साथ अनौपचारिक रूप से वाग्व्यवहार में प्रचलित भारतीय ज्ञान-सम्पदा भी क्रमशः लुप्त होती जा रही है। परिणामस्वरूप आवश्यकता है अन्तर्वैषयिक अध्ययन तथा शोध के माध्यम से उन कारणों के परीक्षण की जो वर्तमान में भारतीय ज्ञान-सम्पदा की व्यवहार में प्रतिष्ठा में प्रतिबन्धक हैं। अन्तर्वैषयिक शोध तथा अध्ययन पारम्परिक तथा आधुनिक भारत की ज्ञान-परम्परा के मध्य समन्वय स्थापित करने में साधक सिद्ध हो सकता है। पारम्परिक बोध के प्रति इस औदासीन्य को निर्मूल करने हेतु विशेष प्रयास की आवश्यकता को ध्यान में रख विश्वविद्यालय में एक स्वतन्त्र भारत अध्ययन केन्द्र की स्थापना के उपक्रम को शताब्दी वर्ष में चरितार्थ किया गया।

भारत अध्ययन केन्द्र के उद्देश्य : भारत अध्ययन केन्द्र के उद्देश्यों में सम्मिलित हैं -

1. भारतीय वाङ्मय का समग्रता के साथ अध्ययन तथा समृद्ध पारम्परिक बौद्धिक परम्परा का मन्थन करते हुए विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षणिक विभागों के मध्य व्यापक स्तर पर अन्तर्वैषयिक शोध की प्रवृत्ति विकसित करना। इसमें सम्मिलित हैं वैदिक वाङ्मय, कला, सौन्दर्यशास्त्र, संस्कृति, भाषा, दर्शन, धर्म, राजनीति, विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा तथा लोकविद्या इत्यादि।

2. संस्कृत की वैदिक विद्वत् परम्परा तथा भारतीय संस्कृति के प्रति रुचिसम्पन्न आधुनिक विद्याओं के प्रतिनिधि विद्वानों व वैज्ञानिकों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करते हुए प्राचीन तथा आधुनिक विद्याओं के मध्य व्यवस्थित रूप से समन्वय सेतु का कार्य करना।

3.वर्तमान में मानवीय अस्तित्व से जुड़ी अनेक ज्वलन्त समस्याओं के व्यापक समाधान के प्रति वैदिक ऋषियों तथा विद्वानों के प्रासंगिक तार्किक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उजागर करना। इस माध्यम से, विशेषकर युवाओं को भारतीय परम्परा के प्रति तार्किक रूप से आस्थावान बनाना।

कार्यशाला का उद्देश्य

भारत जनपदों का देश है। ग्रामों और वनों के समूह ही जनपद कहलाते हैं। आज भी भारत की लगभग 80 प्रतिशत जनता गांवों में बसती है। गांवों और वनों की संस्कृति ही मूलतः भारतीय संस्कृति है जिसे लोक संस्कृति कहा जाता है। इसके निर्माण में जनपदीय साहित्य, संगीत, आचार, विचार, व्यवहार, कला-कौशल एवं ज्ञान विज्ञान सहित जनपदीय भाषाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आज के बदलते परिवेश में ग्राम जीवन के हजारों वर्षों के संचित अनुभव एवं संघर्ष चेतना के अध्ययन तथा मूल्यांकन की गुंजाइश पूरी तरह बनी हुई है। जनपदीय जीवन हमारे पारम्परिक जीवन को तो रचता ही है, वह आधुनिक जीवन को भी बेहतर बनाने में अत्यन्त उपयोगी है। कहने की आवश्यकता नहीं कि जनपदीय जीवन की यह सम्पदा जनपदीय भाषाओं में ही सुरक्षित है। आज जब हमारी लोकभाषाएँ किसी कोने में फेंक दी गईं हों, आधुनिक पीढ़ी मातृभाषा से वंचित रह कर अपने परिवेश, इतिहास एवं चेतना से रहित हो रहे हैं। हम भाषाई विपन्नता के शिकार तथा भाषाओं के बहुआयामी निधि को गँवा देने के कगार पर हैं ,ऐसे में जनपदीय भाषाओं का अध्ययन तथा उन पर पुनर्विचार निश्चय ही एक सकारात्मक प्रयास होगा। इस माध्यम से हम जनपदीय आन्दोलन के मनीषियों आचार्य वासुदेव शरण अग्रवाल, पं. राहुल सांकृत्यायन एवं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी बनारसीदास चतुर्वेदी, आचार्य नरेन्द्रदेव आदि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि भी अर्पित कर सकेंगे।

पिछली कुछ शताब्दियों में दुनिया की असंख्य भाषाएँ या तो विलुप्त हो गईं या फिर विलुप्त होने की कगार पर हैं फिलहाल कुल 3000 भाषाएँ बची हैं, जिनके बारे में अनुमान है कि शताब्दी के अन्त तक शायद 300 बच जाएँ। भारतीय भाषाविद् गणेश देवी जिन्होंने भाषाविद् जार्ज ग्रियर्सन के लगभग 80 वर्षों के बाद भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण कराया। गणेश देवी के अनुसार भारत में तकरीबन नौ सौ भाषाओं एवं बोलियों का भविष्य खतरे में है। भाषाओं की सुरक्षा भाषाओं में संचित निधि के सुरक्षा की गारंटी है। भाषाओं का अध्ययन-अनुशीलन हमें भाषायी बहुलता की ओर ले जाता है। इस परस्परता में ही भाषाओं का भविष्य सुरक्षित हो सकता है। अतः हमें भाषाओं के सवाल पर न केवल सजग होना है बल्कि भावी पीढ़ी को इस परस्परता से परिचित भी कराना है।

भारत अध्ययन केन्द्र भारतीय ज्ञान-सम्पदा के संरक्षण एवं सम्वर्धन के लिए प्रतिबद्धता के क्रम में लोकविद्या विषय के अन्तर्गत हिन्दी प्रदेश की चुनी हुई जनपदीय भाषाओं पर 10 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित कर रहा है। इसमें भोजपुरी, अवधी, ब्रजभाषा, मगही, मैथिली, बुन्देली, बघेली, राजस्थानी एवं छत्तीसगढ़ी को शामिल किया जाएगा।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

भारत अध्ययन केन्द्र

दस दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

कार्यशाला-विवरण

प्रतिदिन–प्र.स. : 01:30 से 3:15 बजे तक
अल्पाहार : 3:15 से 3:30
द्वि.स. : 3:30 से 5:00 बजे तक

दिनांक	विषय	विद्वान् वक्ता
26.11	उद्घाटन सत्र : 'हिन्दी क्षेत्र और उसकी जनपदीय भाषाएँ' (अपराह्न 1:30 बजे से सायं 5:00 बजे तक)	अध्यक्ष-**प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय** निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा मुख्य अतिथि-**प्रो. बलवंत जानी** कुलाधिपति, डॉ. हरिसिंह गौर वि.वि., सागर, म. प्र. विशिष्ट अतिथि-**डॉ. कपिल तिवारी** पूर्व निदेशक, आदिवासी लोक-कला अकादमी, भोपाल, म. प्र.
27.11	**प्र.स.**:लोकज्ञान और लोक जीवन **द्वि.स.**: हिन्दी और उसकी जनपदीय भाषाओं के अध्ययन की आवश्यकता	**प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी**, वाराणसी **अवधेश प्रधान**, वाराणसी
28.11	**प्र.स.**: मैथिली की साहित्य परम्पराएँ	**डॉ. राजीव झा**, मुजफ्फरपुर, बिहार
	द्वि.स.: मगही : साहित्य और जनपदीय जीवन	**डॉ. रविकान्त**, सी.एस.डी.एस. नई दिल्ली
29.11	**प्र.स.**: छत्तीसगढ़ी में साहित्य की लिखित एवं वाचिक परम्परा	**डॉ. पीसी लाल यादव**, राजनादगाँव छत्तीसगढ़
	द्वि.स.: राजस्थानी : ख्यात और बात की परम्परा	**डॉ. सूरज राव**, अजमेर, राजस्थान
30.11	**प्र.स.**: ब्रजभाषा का लोक साहित्य	**डॉ. हरिमोहन**, आगरा, उत्तर प्रदेश
	द्वि.स.: ब्रजभाषा का विकास एवं विष्णुदास का 'पांडवचरित'	**प्रो. राजकुमार**, वाराणसी
01.12	**प्र.स.**: बुंदेली साहित्य और ईसुरी का 'फाग'	**डॉ. बहादुर सिंह परमार**, छतरपुर, म.प्र.
	द्वि.स.: बघेली का लोक एवं आधुनिक साहित्य	**प्रो. आशीष त्रिपाठी**, वाराणसी
03.12	**प्र.स.**: मातृभाषा की नागरिकता	**प्रो. सदानंद शाही**, वाराणसी
	द्वि.स.: देशज इतिहास लेखन की परंपरा और राजस्थान	**प्रो. मनोहर सिंह राणावत**, मंदसौर, म.प्र.
04.12	**प्र.स.**: भोजपुरी का समाज और और 'लोरिकायन' की परंपराएँ	**डॉ. रामनारायन तिवारी**, गाजीपुर उत्तर प्रदेश
	द्वि.स.: भोजपुरी साहित्य की वाचिक परम्परा	**डॉ. प्रकाश उदय**, वाराणसी
05.12	**प्र.स.**: अवधी की लोक साहित्य परंपरा और 'चंदायन'	**डॉ. कमल नयन पाण्डेय**, सुल्तानपुर उत्तर प्रदेश
	द्वि.स.: अवध की लोक संस्कृति	**श्रीमती मालिनी अवस्थी**, लखनऊ
06.12	**समापन सत्र/जनपदीय लोकरंग** लोरिकी एवं अवधी के परंपरागत गीतों की प्रस्तुति	श्रीमती मालिनी अवस्थी डॉ. मन्नू यादव और साथी